गुली जला वर्तन क्ये जलवन्तरे। दंडाया मस्त्रनी नाशे दिवसे कुमासमा के ॥ द् ॥ झुनंगमस्त्रमंडू ने तथा शासामृगेपित्। पराक्रमा विक्रमेस्यासा मध्यी हो। गयारापि ॥ द् ॥ महापदाः प्रमाना गनिधसंख्यां तरे प्रवा या तया में। न्यवज्ञी स्वित्र में कि कि ने प्रवा ॥ द ॥ सार्व में। सार्व में। मंत्र देशा में विक्रमेस्यां में विक्रमेस्यां निर्मा कि के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के स्वा ना भूके प्रमान के स्व ना ना भूके प्रमान के स्वा ना भूके प्रमान के स्व ना ना में स्व में स्व ना ना में स्व म

\*\*\*\*

यान्

मेदि

माना

॥ येनं॥ योनावायीय मनयाया नापिधूमिनत्यांगेषु । बारणयोगस मजा
यानेषुप्रमास्त्र ग निरुद्धानः ॥ १ ॥ ज्यामानिर बद्धधायामार्थाद्धुद्धा
ब मिन्नगमनेव । नाज्या न नेद्यो सिर्द्धणान यनिर शवर्मनेत्रेथी विनि
॥ १॥ यदिः ॥ अर्घ्धिशलाजन्यधुवेचन्यार्थ्येच्वा च्यवत्। अन्तरक्
छेसिमस्तायामन्ते इत्रेष्ठधमेनिषु ॥ ३ ॥ अर्घ्धम धस्योग्येस्यार र्घ्धांथिय चवा च्यवत् । अन्ये। इस्हृशे तरयोर र्ज्यस्यात्वा मिवेष्ठययोः ॥ ४ ॥ आस्येमचेचन नाध्येन इत्वेचस्वियां स्थिते । इज्यादाने अव्ये अच्छी यांसं गमेस्त्री गुरेनिषु ॥ ५ ॥ इभ्याकरेणुश स्त्र ब्वेयः स्वियामाद्येच्वा च्यवत्। बाष्यान्त्र प्रमुद्धी विमुद्धा च्याक्योः ॥ ६ ॥ कन्याकुमारिकाना व्ये सिप्योग्रिमेरयोः । स्योग्रेग्तरे वेष्ठमकल्याना प्रचयेषुच ॥ ७ ॥